www.thearyasamaj.org

[redacted]

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्
कृणवन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्षः 73 अंक : 32
सृष्टि संवत् 1960853117
6 नवम्बर, 2016
दयानन्दब्द 193
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–73, अंक : 32, 3-6 नवम्बर 2016 तदनुसार 22 कार्तिक सम्वत् 2073 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

पाप–त्याग

ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

यो नः पाप्मन्न जहासि तमु त्वा जहिमो वयम्।
पथामनु व्यावर्तनेऽ न्यं पाप्मानु पद्यताम्॥ अथर्ववेद 6/26/2

शब्दार्थ-हे **पाप्मन्**=पापवृत्ते: **यः**=जो तू **नः**=हमें **न**=नहीं **जहासि**=छोड़ता है **उ**=ऐसे **त्वा**=तुझ सो **वयम्**=हम **जहिमः**=छोड़ते हैं। **पथाम्**=मार्गों के **व्यावर्तने**=बदलने पर **पाप्मा**=पाप **अन्यम्+अनु**=अन्य मार्ग को लक्ष्य करके **अनु पद्यताम्**=प्राप्त हो।

व्याख्या-पाप का पन्थ बड़ा विकट है। एक बार मनुष्य इस पाप-पथ पर चल पड़े, तो इससे हटना बड़ा कठिन होता है। पाप-पथ नदी के प्रवाह के अनुकूल चलता है। पाप-मार्ग में चलने वाले को चलते समय आपाततः कोई हानि प्रतीत नहीं होती, अतः वह बेखटके इस पर चला जाता है। अब पापाचरण का अभ्यास इतना बढ़ गया है कि इच्छा न होते हुए भी उससे पाप हो जाते हैं, क्योंकि पापाचार से उसके संस्कार ऐसे बन गये हैं कि उसे फिर वही व्यवहार करने पड़ जाते हैं। योगदर्शन के भाष्य में इस संस्कार-व्यवहार-चक्र को बहुत सुन्दर शब्दों में समझाया गया है-

तथाजातीयकाः संस्कारा वृत्तिभिरेव क्रियन्ते संस्कारैश्च वृत्तय इति।
एवं वृत्तिसंस्कारचक्रमनिशमावर्त्तते।

–यो० द० १/५

वृत्तियों से ही तदनुरूप संस्कार बनते हैं और संस्कारों से पुनः वृत्तियाँ [व्यवहार] बनती हैं। इस प्रकार वृत्ति [व्यवहार] और संस्कार का चक्र दिन-रात चलता रहता है।

संस्कार को मारना सरल कार्य नहीं है। तभी तो कहा-**'यो नः पाप्मन् न जहासि'**=पाप! तू हमें नहीं छोड़ रहा। पाप के संस्कार और आचार से निस्तार पाने का एक ही द्वार है- वह है पाप-संस्कार तथा पापाचार के विरुद्ध विचार। योग की परिभाषा में इसको **'प्रतिपक्षभावना'** कहते हैं। मनुष्य जब दृढ़-सङ्कल्प कर ले, तब कुछ भी असाध्य नहीं रहता, अतः दृढ़ प्रतिज्ञा की भावना से साधक कहता है-**'तमु त्वा जहिमो वयम्'**=ऐसे तुझ को हम त्यागते हैं।

तू हमें नहीं त्यागता, हम तुझे त्यागते हैं। आरम्भ में पकड़ा भी हमने था, अब छोड़ेंगे भी हम ही। पाप-पुण्य का जहाँ चौराहा है, जहाँ से दोनों मार्ग पृथक् होते हैं, वहाँ ही इसका त्याग किया जा सकता है। पाप की वासना और पुण्य की वासना एक ही स्थान में रहती है। देखने की शक्ति निः सन्देह आत्मा की है, किन्तु दिखाती आँख है। इस प्रकार भद्र-अभद्र विचारने और करने का सामर्थ्य वास्तव में आत्मा में है, किन्तु आत्मा से इसे कराता मन है। इस दृष्टि से जैसे चक्षु सभी रूपों का एकायन=प्रधान ठिकाना है, वैसे ही मन भी सभी-भले-बुरे-विचारों का एकायन है। वेद के शब्दों में मन 'पथों का व्यावर्त्तन' है। यहाँ से ही मार्ग बदलते हैं। यहाँ से पाप को दूसरे मार्ग पर चला दो, अर्थात् उसे उदय ही न होने दो, उसका विनाश कर दो।

यह हम कह चुके हैं कि पाप के संस्कार बड़े प्रबल होते हैं। वे पुनः सामने आएँगे। तब प्रतिपक्षभावना से काम लो। योगदर्शन के भाष्य में श्री व्यासदेवजी ने लिखा है-

एवमुन्मार्गप्रवणवितर्कज्वरेणातिदीप्तेन बाध्यमानस्तत्प्रतिपक्षान् भावयेत्। घोरेषु संसाराङ्गारेषु पच्यमानेन मया शरणमुपगतो योगधर्मः। स खल्वहं त्यक्त्वा वितर्कान् पुनस्तानाददानस्तुल्यः श्ववृत्तेनेति भावयेत्। यथा श्वा वान्तावलेही तथा त्यक्तस्य पुनराददान इति।

इस प्रकार कुमार्ग के लिए उन्मुख वितर्क-(पाप)-रूप अति तीव्र ज्वर से पीड़ित मनुष्य प्रतिपक्षों का=विरुद्ध भावों का चिन्तन करे। अहो! संसाररूप घोर अङ्गारों में जलते हुए मैंने किसी भाँति योगधर्म की शरण ली। अब मैं उसे छोड़कर फिर उन पापों को करूँ, सो यह कुत्तों के व्यवहार के समान है, ऐसा विचार करना चाहिए। कुत्ता अपने वमन=क़ै को चाटता है, वैसा ही त्यागे कार्य को पुनः अपनाने वाले को समझना चाहिए।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

www.thearyasamaj.org

"महर्षि का वेद-भाष्य तर्क व विज्ञान पर आधारित है"

–ले० पं० खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोबिन्दि राय आर्य अण्ड सन्द १८० महात्मा गान्धी रोड़, (दो तल्ला) कोलकत्ता-700007

यह लेख मैंने आदरणीय डॉ. सोमदेव जी शास्त्री द्वारा लिखित ''यजुर्वेद सन्देश'' पुस्तिका से उदधृत किया है। डॉ. साहब आर्य जगत् के एक उच्च कोटि के प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान् है। सभी आर्य जन इनको श्रद्धा व सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। प्रसन्नता की बात यह है कि डॉ. साहब मेरे परिवार से विशेष रूप से जुड़े हुए हैं। मेरे परिवार वालों ने मेरे स्व० पिता गोविन्द राम आर्य (प्रधान जी) की पुण्य स्मृति में ''आदर्श आर्य प्रवर'' शीर्षक की पुस्तक छपवाई थी, उसका सम्पादन डॉ. साहब ने ही किया था। जिसकी सभी लोगों ने प्रशंसा की थी। इसी पुस्तक के उद्घाटन के समय डॉ. साहब मेरे गाँव देवराला (हरियाणा) भी गये थे। मेरे परिवार के सभी लोगों से इनका मधुर सम्बन्ध है। कलकत्ता में मेरे घर को भी कई बार पवित्र किया है। इस प्रकार ये मेरे पूरे परिवार से पूर्ण परिचित हैं।

इनकी पुस्तक ''यजुर्वेद संदेश'' को पढ़ने से इनकी प्रकाण्ड विद्वता का परिचय मिलता है। इस पुस्तक को पढ़ने से यह सुस्पष्ट हो जाता है कि महर्षि देव दयानन्द का वेद-भाष्य, अन्य भाष्य कारों से कहीं अधिक सार्थक है जो तर्क और विज्ञान की कसौटी पर ख़रा उतरता है। पहले के भाष्यकार वेदों में हिंसा, इतिहास तथा केवल कर्मकाण्ड के ही ग्रन्थ मानते थे परन्तु महर्षि ने वेदों के सही अर्थ लगाकर यह बतला दिया कि वेदों में कहीं पर भी हिंसा नहीं है और न ही इनमें इतिहास है और वेद केवल कर्मकाण्ड के ही नहीं बल्कि सब सत्य विद्याओं के ग्रन्थ हैं। महर्षि ने यह सिद्ध करके मानव-मात्र का बड़ा उपकार किया है। इसी भावना से प्रेरित होकर मैंने भी जो यह लेख लिखा है, इसे पढ़कर मैं आशा करता हूँ कि सुधि पाठकगण वेदों के सही स्वरूप को समझ पायेगें। यही मेरी उपलब्धि होगी। लेख इसी भाँति है:

१. मध्यकालीन वेद भाष्यकार-मध्यकाल में अनेक वेद भाष्यकार हुए हैं जिन्होंने वेदों का या वेद के कुछ हिस्सों का भाष्य किया है। विक्रम संवत 687 दयानन्द स्वामी ने ऋग्वेद के प्रथम अष्टक के 4-5 सूक्तों का आधियाज्ञिक प्रक्रिया (कर्मकाण्ड परक) वेद भाष्य किया। स्कन्द स्वामी के समय ही ''उद्गीथ'' हुए हैं, उन्होंने ऋग्वेद के दसवें मण्डल के पांचवें सूक्त के चौथे मन्त्र से 86 सूक्त के 6 मन्त्र तक वेद भाष्य किया। यह भाष्य भी कर्मकाण्ड परक ही हैं। विक्रम संवत् की 12वीं शताब्दी में वेकट-माधव ने ऋग्वेद का आधियाज्ञिक प्रक्रिया के अनुसार भाष्य किया। विक्रम संवत् की 13वीं शताब्दी में आत्मानन्द ने ऋगवेद के अस्यवामीय सूक्त (ऋग्वेद के पहिले मण्डल के 164 सूक्त) का अध्यात्मिक प्रक्रिया-नुसार भाष्य किया। आनन्द तीर्थ ने (विक्रम संवत् 1255-1335) ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के चालीस सूक्तों का आध्यात्मिक भाष्य किया। सायणाचार्य (विक्रम संवत् 1372-1442) के सम्पूर्ण ऋग्वेद का (बात खिल्य सूक्तों को छोड़कर) आधियाज्ञिक प्रक्रिया परक भाष्य किया। कहीं-कहीं आध्यात्मिक प्रक्रियानुसार अर्थ भी किये हैं।

उव्वट (विक्रम संवत् 1100) ने यजुर्वेद का भाष्य किया जो कर्मकाण्ड परक भाष्य है। महीधर (विक्रम संवत् 1645) ने भी यजुर्वेद का भाष्य याज्ञिक प्रक्रियानुसार किया। इन दोनों भाष्यकारों ने यजुर्वेद के प्रत्येक मन्त्र को यज्ञ में होने वाली प्रक्रियाओं के साथ जोड़ा। गो मेध, अश्वमेधादि शब्दादि का अनर्थ करके पशुहिंसा जैसा जघन्य कृत्य को यजुर्वेद मन्त्रों द्वारा प्रतिपादित किया। यजुर्वेद की तैतिरीय शाखा का भाष्य भट्ट भास्कर ने वि० सं० 1100 में दिया तथा इसी शाखा सायण ने भी भाष्य किया।

सामवेद का भाष्य भरत स्वामी ने विक्रम संवत् 1360 के लगभग किया, कर्मकाण्ड परक अर्थों के साथ-साथ कहीं-कहीं अध्यात्म परक अर्थ भी किये। माधव जो विक्रम की सातवीं शताब्दी में हुए, उन्होंने भी सामवेद का भाष्य किया। आधियाज्ञिक प्रक्रिया के अतिरिक्त कुछ मन्त्रों का आध्यात्मिक अर्थ भी किया। अपने भाष्य में ब्राह्मण ग्रन्थों के प्रमाण भी उद्धृत किये। भरत स्वामी और माधव के अतिरिक्त सायण ने भी सामवेद का भाष्य किया अथर्व वेद का मध्य कालीन आचार्यों में केवल सायण ने ही भाष्य किया। इसमें भी उन्होंने मन्त्र-तन्त्र, जादू-टोना कृत्य, अभिचार (हिंसा) आदि कृत्यों का वर्णन भाष्य करते हुए किया। मध्यकालीन सभी आचार्यों ने अपने भाष्यों में मुख्य रूप से याज्ञिक कर्मकाण्ड का वर्णन किया। इसमें भी पशु हिंसा, मांस भक्षण, जादू-टोना, मारण-उचाटन, अग्नि-इन्द्रादि देवताओं का सशरीर स्वर्ग में निवास, उनका परिवार सहित सुख ऐश्वर्यों का भोगना, यज्ञ की हवि (आहुति) का भक्षण कहने के लिए स्वर्ग से अदृष्ट रूप में यज्ञ स्थल पर आना और यजमान को आशीर्वाद देना, मरने के पश्चात् यजमान को स्वर्ग में ले जाना आदि अनेक मिथ्या विचारधारा वेद के नाम पर प्रचलित करने का कार्य किया। जिससे सामान्य जनता वेदों से विमुख हो गई। वेद केवल कुछ व्यक्ति विशेष (ब्राह्मणों) के लिए ही हैं जो याज्ञिक कर्मकाण्ड कराते हैं। इस प्रकार वेद केवल याज्ञिक कर्मकाण्ड के लिये ही उपयोगी हैं। यह प्रसिद्ध कर दिया गया। इस प्रकार जन सामान्य की वेद से रूचि हट गयी। वेद कथा, वेद प्रवचन, वेद प्रचारादि के स्थान पर भागवत-गीता, उपनिषद् और सत्यनारायण आदि की कथा तथा प्रवचनादि प्रचलित हो गये।

पाश्चात्य विद्वान्-आधुनिक युग (18वीं 19वीं शताब्दी) में वेदों पर भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों में विद्वानों ने भी कार्य किया। सन् 1850 में डॉ. एच-एच विलसन ने सायण भाष्य के आधार पर ऋग्वेद का अंग्रेजी में अनुवाद किया तथा वेद की संहिताओं के तथा सायण भाष्य के सम्पादक का भी परिक्रम साध्यकार्य किया। जर्मन भाषा में ऋग्वेद का पद्यानुवाद जर्मन विद्वान् ग्रासमान ने सन् 1876-1877 में किया। इसी प्रकार जर्मन विद्वान् ए० लुडविग. एच. ओलनवर्ग ने ऋग्वेद का जर्मन अनुवाद किया। आर. टी. एच. ग्रोकिश ने (सन् 1881-1898) चारों वेदों का अंग्रेजी में पद्यानुवाद किया। लंगाल्वा नामक फ्रांसीसी विद्वान् ने फ्रेंच भाषा में ऋग्वेद का अनुवाद किया। डॉ. कीथ ने तैत्तिरीय सहिता का अंग्रेजी अनुवाद किया। थियोडोर बेन्फे ने (सन् 1848 में) सामवेद..... तथा अथर्व वेद (पैप्पलाद शाखा) का बलूम फील्ड ने अंग्रेजी अनुवाद करके सन् 1901 में प्रकाशित किया। इस प्रकार विदेशों में वेदों पर विगत दो सौ वर्षों से बहुत कार्य हुआ।

महर्षि दयानन्द-महर्षि दयानन्द ने बहुत थोड़े समय में, वेदों का प्रचार-प्रसार करना, ईश्वर, धर्म और वेदों के नाम पर, प्रचलित पाखण्ड और अन्धविश्वास का खण्डन, यथा समाधान करना, शास्त्रार्थ करना, स्वार्थी लोगों द्वारा उपस्थित विघ्न-बाधाओं का सहन करना, दिन-रात प्रचार यात्रा करना, छोटे बड़े 43 ग्रन्थों को लिखना, अपने आप में एक अद्भुत कार्य उन्होंने किया। स्वार्थी और मूर्ख व्यक्तियों ने उन पर ईंट-पत्थर फेंके, खाने में विष मिलाया, कुटिया में आग लगायी, ध्यान में बैठे हुए को नदी में फेंका आदि दुष्कृत कार्य किये किन्तु गुरू भक्त एवं प्रभु विश्वासी देव दयानन्द अपने लक्ष्य से विचलित नहीं हुए और गुरू को दिया हुआ वचन उन्होंने आजीवन निभाया।

मध्यकालीन आचार्यों ने यजुर्वेद का भाष्य करते हुए उव्वट और महीधर ने गोमेध, अश्वमेध, नरमेधादि शब्दों को लेकर गाय, घोड़ा, नर आदि की हिंसा का विस्तार से वर्णन किया। यजुर्वेद के छठे अध्याय के 7 से 22वें मन्त्र तक पशु को बांधना, देवता के लिए उसका वध करना, आहुति देना का भयानक चित्रण किया है, साथ ही यह भी प्रचलित कर दिया कि यज्ञ के लिए की गयी हिंसा, हिंसा नहीं होती। ऐसा कुकृत्य वेदों के साथ किया गया, जिसे पढ़कर विवेकशील व्यक्ति वेदों से विमुख

(शेष पृष्ठ 7 पर)

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

स्वराज्य के जन्मदाता-महर्षि दयानन्द

उन्नीसवीं सदी के इतिहास में दयानन्द को एक समाज सुधारक के रूप में जाना जाता है। मगर उन्होंने भारतीय लोगों में राष्ट्रीय विचारधारा का जो शंख फूंका था उसका इतिहास में कहीं वर्णन नहीं मिलता। उनके समाज सुधार के कार्य भी उनकी राष्ट्रीय विचारधारा से ओतप्रोत थे। भारतीयों में राष्ट्रीय विचारधारा जगाने का श्रेय उन्हीं को जाता है। उन्होंने भारतीयों में स्वदेशी तथा स्वदेशाभिमान की भावनाओं को पुन: जागृत किया। वास्तव में वह एक समाज सुधारक होने से पूर्व राष्ट्र के सच्चे उद्धारक थे।

दयानन्द की राष्ट्रीय विचारधारा का उत्कट प्रमाण है उनकी जन्मभूमि के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा। जन्मभूमि को स्वतन्त्र देखने का स्वप्न सबसे पहले उन्होंने ही संजोया था। वे कहते थे कि-कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। स्वाधीनता शब्द का सर्वप्रथम उपयोग उन्होंने अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में किया है। सत्यार्थ प्रकाश उनकी राष्ट्रीय विचारधारा से परिपूर्ण है। इसमें उन्होंने सत्य के अर्थों पर प्रकाश डालते हुए राष्ट्रवाद की भावना का भी चित्रण किया है। उन्होंने एक राजा की परिभाषा देते हुए कहा है कि-राजा उसी को कहते हैं जो पवित्र गुण, कर्म स्वभाव से प्रकाशमान, पक्षपात रहित, न्याय धर्म की सेवा, प्रजा में पितृवत् वर्ते और उनको पुत्रवत् मानकर उनकी उन्नति और सुख बढ़ाने का सदा यत्न करे। ठीक इसी प्रकार उन्होंने प्रजा की परिभाषा देते हुए कहा-प्रजा उसको कहते हैं जो पवित्र, गुण, कर्म, स्वभाव को धारण करके पक्षपात रहित न्याय धर्म के सेवन से राजा की उन्नति चाहती हुई राजद्रोह रहित राजा के साथ पुत्रवत् वर्ते। जन्मभूमि के प्रति उनका अगाध प्रेम छठे समुल्लास में कई स्थानों पर प्रकट होता है। एक स्थान पर उन्होंने लिखा है कि- स्वराज्य, स्वदेश में उत्पन्न हुए वेदज्ञ, शास्त्र, शूरवीर, लक्ष्यवान, कुलीन तथा धर्मचतुर को ही मन्त्री बनाया जावे। राष्ट्रीय विचारधारा जागृत करने के लिए उन्होंने एक स्थान पर लिखा है कि- हम और आपको उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना है, अब पालन होता है तथा आगे भी होता रहेगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब मिलकर करें।

महर्षि दयानन्द गुजरात में जन्मे थे, मथुरा में गुरू विरजानन्द से शिक्षा प्राप्त की तथा राष्ट्रीय जनता में राष्ट्रीयता जगाने के लिए राष्ट्रभाषा हिन्दी का सहारा लिया। यह उनकी स्वदेशीयत का ही प्रमाण था। उनका रहन-सहन, खान-पान, बोल-चाल, वेषभूषा आदि पूर्णरूपेण स्वदेशी था। वे उनमें से नहीं थे, जो खाते-पीते इस देश का थे और गुणगान यूरोप का गाते थे। दयानन्द के इस गुण को देखते हुए टी.एल. वास्वानी ने कहा था कि- दयानन्द की देशभक्ति का आधार उनका आर्य आदर्श के लिए प्रेम था। उनकी देशभक्ति उन लोगों के समान नहीं थी जो मुख पर भारत रखते हैं किन्तु भोजन, वस्त्र, भाषा तथा विचारों में यूरोपीय आदर्श बरतते हैं।

जब भारतीय स्वदेश भूल चुके थे, उनका स्वाभिमान खो चुका था, हिन्दू धर्म की प्रतिष्ठा को दीमक लग गई थी तथा हिन्दू संस्कृति तिल-तिल जल रही थी। उस समय दयानन्द ने लोगों को एक ईश्वर, एक धर्म, एक ध्वज तथा एक ही ग्रन्थ की प्रभुसत्ता में लाकर, आपसी भेदभाव मिटाकर भारत में राजनैतिकता एकता स्थापित करने का स्वप्न देखा था और इसमें काफी हद सीमा तक सफल रहे। भारतीयों को इस देश की गौरव गरिमा का परिचय देते हुए राष्ट्रीय विचारधारा के जनक ने सत्यार्थप्रकाश में लिखा है कि-यह आर्यावर्त देश ऐसा है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है। इसलिए इस भूमि का नाम स्वर्ण भूमि है क्योंकि यही स्वर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है। जितने भूगोल में देश हैं वे इसी देश की प्रशंसा करते हैं और आशा रखते हैं कि आर्यावर्त देश ही सच्चा पारसमणि है, जिसको लोहे रूपी दरिद्र विदेशी छूते ही स्वर्ण अर्थात् धनी हो जाते हैं। वे देशवासियों को स्मरण दिलाते हुए आगे लिखते हैं कि- सृष्टि से लेकर पांच सहस्र वर्षों से पूर्व समय पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम राज्य था।

महर्षि दयानन्द की विचारधारा, स्वदेश प्रेम तथा स्वदेशाभिमान को देखते हुए एक पाश्चात्य लेखक ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि- दयानन्द की शिक्षाओं की मुख्य प्रवृत्ति हिन्दुत्व का सुधार करने की उतनी नहीं है जितनी उसे उन विदेशी प्रभावोंके विरूद्ध प्रतिशोध के लिए संगठित करने की है जो उनके विचार में उसका विराष्ट्रीयकरण कर रहे थे। महर्षि दयानन्द जब प्रचीन भारत का गौरव गान करते हैं तो उससे राष्ट्रीय विचारधारा का पोषण करने वाले तत्त्वों में उत्तेजना मिलती है और उस तरूण राष्ट्रीय विचारधारा का सुषुप्त राष्ट्रीय अहंकार जाग उठता है, तथा आकाक्षाएं प्रज्वलित हो उठती हैं। महर्षि दयानन्द ने अपने देश को सभी प्रकार की कुरीतियों, अन्धविश्वासों, पाखण्ड़ों, अनाचारों आदि से बचाने का प्रयास किया। महर्षि दयानन्द की इच्छा थी कि हमारा राष्ट्र स्वतन्त्र हो और इस राष्ट्र के निवासी अपने प्राचीन गौरव को लाने का प्रयास करें। महर्षि दयानन्द ने अपने विचारों की अग्नि को प्रज्वलित रखने के लिए आर्य समाज की स्थापना की। महर्षि दयानन्द की विचारधारा से हमारे देशवासियों के मन में राष्ट्रीय अहंकार जाग उठा, उनकी आकाक्षाएं प्रज्वलित हो गई जिनके कानों में निरन्तर यह शोकपूर्ण मन्त्र फूंका गया था कि भारत का इतिहास सतत अपमान, अधोपतन, विदेशियों की पराधीनता तथा बाह्य शोषण की शोचनीय गाथा है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि महर्षि दयानन्द की राष्ट्रीय विचारधारा ने लोगों में स्वदेशीयत की प्रेरणा फूंकी, बिस्मिल जैसे क्रान्तिकारी पैदा किए। महर्षि दयानन्द जी वास्तव में इस देश के लिए जन्मे थे, जिनका उद्देश्य केवल अपना भला नहीं अपितु संसार का उपकार करना था। महर्षि दयानन्द ने अपनी राष्ट्रीय विचारधारा से इस देश को जगाने का भरपूर प्रयास किया। महर्षि दयानन्द का जो लक्ष्य था, अपने गुरू को जो वचन दिया था उसी के अनुरूप उन्होंने सम्पूर्ण जीवन कार्य किया और अपने लक्ष्य को पूरा किया।

प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

www.thearyasamaj.org

राष्ट्रभाषा हिन्दी

ले. नरेन्द्र आहूजा 'विवेक' 602 जी एच 53 सैक्टर 20, पंचकूला मो. 09467608686, 01724001895

भाषा भावों की संवाहक होती है। अपने मनोभावों के प्रकटीकरण का सर्वोत्तम साधन उस मनुष्य की होती है। कोई भी व्यक्ति अपने मन के उद्‌गार दूसरे के मन में सीधे तभी उतार सकता है जब दोनों वक्ता और श्रोता, लेखक और पाठक की भाषा एक ही हो। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि भाषा एक ऐसा सूत्र है जो किसी देश के समस्त नागरिकों को बांधकर रखता है। जिस प्रकार बिखरे हुए मोती एक धागे में पिरो देने के बाद सुंदर माला के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं उसी प्रकार भाषा का धागा उस देश के नागरिकों को एकता के सूत्र में पिरो देता है। किन्हीं दो व्यक्तियों के बीच किसी भी प्रकार के ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य को समाप्त कर एकता स्थापित करने के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण कड़ी संवाद कायम करने की होती है। बेहतर संवाद तभी बन सकता है जब वक्ता- श्रोता, लेखक-पाठक की भाषा एक ही हो क्योंकि मनोभावों की सीधी सरल पूर्ण अभिव्यक्ति के लिए भाषा का सामंजस्य और एकरूपता एक आवश्यक शर्त है।

किसी भी राष्ट्र को "**राष्ट्रो वै मुष्ठि**" के वैदिक आदेश के अनुरूप शक्तिशाली बनाने के लिए और एकता के सूत्र में बांधने के लिए सर्वमान्य, सर्वस्वीकार्य राष्ट्रभाषा का होना अत्यन्त आवश्यक होता है। किसी भी देश का नागरिक अपनी व्यथाकथा की अभिव्यक्ति सर्वाधिक स्पष्ट शब्दों में केवल अपनी मातृभाषा में ही कर सकता है और यदि किसी राष्ट्र के अधिकांश नागरिकों द्वारा बोली, सुनी, लिखी जाने वाली मातृभाषा ही राष्ट्रभाषा हो तो उस राष्ट्र के नागरिक भाषाई एकता के सूत्र में बंधकर उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हो सकते हैं। इसके विपरीत यदि किसी राष्ट्र के नागरिक वोट बैंक की तुच्छ राजनीति का शिकार हो कर अलग-अलग भाषाएँ बोलते लिखते पढ़ते रहें तो वे कभी एक राष्ट्र के रूप में एक सूत्र में बंधकर उन्नति के पथ पर अग्रसर नहीं हो सकते। अपितु भाषाई कबीलों में बंटे या राजनेताओं द्वारा सत्ता के साधन बनकर बांट दिए गए आपस में लड़ते हुए केकड़ा संस्कृति के शिकार हो जाते हैं। यहां केकड़ा संस्कृति का अभिप्राय एक दूसरे की उन्नति से जलकर ईर्ष्या रखने वाले आपस में लड़ने वाले, एक दूसरे की टांग खींचने वाले ऐसे लोग हैं जैसे खुले बर्तन में छोड़ दिए गए केकड़े एक दूसरे की टांग खींचकर नीचे गिराते रहते हैं और बर्तन के खुले होने के बावजूद उससे बाहर नहीं आ पाते।

कोई भी राष्ट्र अपनी राष्ट्रभाषा की पूर्ण स्वीकार्यता के बिना गूंगा ही रह जाता है। गूंगा इसलिए क्योंकि एक भाषा के बिना हम एक राष्ट्र के नागरिक होने के बावजूद एक दूसरे को अपने मनोभाव अभिव्यक्त नहीं कर पाते। विशेषरूप से उत्तर और दक्षिण भारत में पाई जाने वाली भाषाई भिन्नता हमें गूंगा और बहरा ही तो बना देती है। यहां यदि बहुमत के सिद्धांत का भी सहारा लें तो राष्ट्रभाषा हिन्दी जो कि इस राष्ट्र के अधिकांश नागरिकों द्वारा बोली, सुनी, समझी जाती है उसे राज्य की सहायता से सही मायनों में राष्ट्रभाषा का सम्मान मिलना चाहिए। कई बार रोग की अवस्था में हमें कड़वी दवाई ना चाहते हुए भी पीनी पड़ती है और एक रोगी के लिए वह कड़वी दवाई अमृतरूपी औषधि का कार्य करती है। ठीक इसी प्रकार भाषाई कबीलों में बंट रहे विघटन के रोग से ग्रस्त हो चुके राष्ट्र के उपचार के लिए राज्य आदेश के द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी को उसका उचित स्थान व सम्मान देते हुए लागू करने की आवश्यकता है।

लेकिन हमारे देश में तो स्थिति इससे भी अधिक बदतर है क्योंकि राष्ट्र और राज्य के बीच में खाई बनाकर शासित प्रजा का शोषण करने के कलुषित भाव से नौकरशाही के तथाकथित अभिजात्य वर्ग ने अंग्रेजी को ही स्वतंत्रता प्राप्ति के सत्तर वर्षों के बाद भी राज्य के कामकाज की भाषा बनाकर रखा हुआ है। आज भी स्वतंत्र राष्ट्र का प्रत्येक बच्चा विदेशी आँगल भाषा मजबूरी में पढ़ने के लिए अभिशप्त है। हम आजाद तो अवश्य हो गए लेकिन कुटिल मैकाले की गुलाम भारत को दी गई गुलामी की मानसिकता वाली शिक्षा प्रणाली के कारण हम आज भी गुलाम हैं। अंग्रेजी के राज्य भाषा होने के कारण हम आज भी हर विषय को उन्हीं अंग्रेजों के नजरिये से देखते परखते हैं। सभी उच्च शिक्षा का माध्यम आज भी अंग्रेजी बना हुआ है। राज्य के सभी कामकाज आज भी अंग्रेजी में होते हैं और हमारी हालत कौआ चला हंस की चाल वाली हो चुकी है।

अंग्रेजी के प्रति इस मोह के कारण विश्वपटल पर राष्ट्रवादी देशों में हम जगहंसाई के पात्र बनते हैं। जब भी कोई हमारे देश का नेता बाहर विदेशों या संयुक्त राष्ट्र में राष्ट्रभाषा हिन्दी में अपनी बात रखता है। तो वह हमारे लिए अविस्मरणीय एतिहासिक क्षण बन जाता है। संयुक्त राष्ट्र में माननीय पूर्वप्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का हिन्दी में दिया एतिहासिक उद्‌बोधक या फिर वर्तमान प्रधानमंत्री मोदी जी की हिन्दी में बोलने की चुम्बकीय आकर्षणशक्ति हमारे लिए गौरव का क्षण बनती है।

हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी समस्त भाषाओं की जननी सर्वाधिक वैज्ञानिक संस्कृत में प्रयोग होने वाली देवनागरी लिपि पर आधारित है और इसी कारण शायद विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा मानी जाती है। संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा के साथ-साथ ईश्वरीय वाणी भी है क्योंकि सृष्टि के रचयिता परमपिता परमेश्वर ने सृष्टि के समस्त प्राणियों के लिए आचार संहिता के रूप में चारों वेदों का ज्ञान चार ऋषियों के माध्यम से संस्कृत भाषा में ही दिया था। उसी देवनागरी लिपि पर आधारित अपनी राष्ट्रभाषा मातृभाषा हिन्दी पर हमें गौरव होना चाहिए और टूटी-फूटी गलत अंग्रेजी बोलने वाले को पढ़ालिखा और हिन्दी बोलने वाले को अनपढ़ समझने की हीन भावना से मुक्त होना चाहिए।

ऋषि निर्वाण दिवस मनाया

29.10.2016 को आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल की दोनों ब्राचों समेत मेन आर्य स्कूल लुधियाना में दीपावली के शुभ अवसर पर बच्चों ने अपने-अपने कमरों की सफाई की और कमरों को सजाया। इस अवसर पर मुख्य मेहमान, स्कूल के मैनेजर श्रीमती विनोद गांधी जी पधारे और बच्चों को आशीर्वाद दिया और कहा कि आर्य संस्थाएं, आर्य स्कूल इस त्यौहार को महाऋषि निर्वाण दिवस के रूप में मनाते हैं। इस अवसर पर स्कूल की प्रिंसीपल श्रीमती रेखा काहौल ने भी बच्चों को आशीर्वाद दिया। और उनको नसीहत दी कि पटाखे कम चलाएं इस से पैसे की बर्बादी तो होती ही है बल्कि प्रदूषण भी बहुत फैलता है। इस अवसर पर स्कूल के सभी अध्यापकों ने बच्चों के साथ मिलकर कमरों की सजावट में बढ़-चढ़ कर साथ दिया। स्कूल की दोनों ब्रांचों के इंचारज श्री राकेश कुमार जी, श्रीमती अनुबाला जी और स्कूल के सभी अध्यापक वर्ग और अन्य कर्मचारी वर्ग, यूनीयन के प्रधान श्री जनक राज भगत जी भी इस कार्यक्रम को देखने के लिए विशेष रूप से शामिल हुए।

www.thearyasamaj.org

कुछ उपनिषदों से (बृहदारण्यक उपनिषद्) देव विषयक

ले. -डा० सुशील वर्मा गली मास्टर मूल चंद वर्मा फाजिलका-152123

प्राय: यह प्रश्न आज भी हम करते है कि देवता कितने है। याज्ञवल्क्य इस विषय में उत्तर देते हैं कि वैश्वदेव-निविदा में लिखा है-''त्रयश्च, त्री च शता, त्रय: च, त्री च सहस्रेति'' अर्थात् 3, 300, 3003 कुल 3306। एक बार फिर प्रश्न किया गया देव कितने है ? उत्तर मिला 33, फिर प्रश्न किया देव कितने है ? उत्तर मिला 6, पुन: वहीं प्रश्न उसके उत्तर में देवता 3, पुन: प्रश्न के उत्तर में 2 पुन: प्रश्न करने पर उत्तर में ऋषि ने कहा अध्यर्द्ध अर्थात् 11/2, एक बार फिर उसी प्रश्न के उत्तर में याज्ञवल्क्य ने कहा एक। फिर प्रश्न उठा कि फिर 3306 देव जो कहे गए है वे कौन से है।

याज्ञवल्क्य कहते है इतनी बड़ी संख्या तो देवों की महिमा का गुणगान के लिए कही जाती है वास्तव में देव तो 33 है। प्रश्न किया गया है कि ये 33 देवता कौन से है। इसके उत्तर में उन्होंने कहा 8 वसु 11 रूद्र, 12 आदित्य, एक इन्द्र और एक प्रजापति। इस प्रकार ये 33 देवता है।

8 वसु-अग्नि, वायु, पृथ्वी, आदित्य, अन्तरक्षि, द्यौ: चन्द्रमा नक्षत्र। वसु अर्थात् वसाने वाले। इन्हीं पर सारी सृष्टि टिकी हुई है। यहीं जीव मात्र को वसाए हुए है।

11 रूद्र-10 प्राण और ग्यारहवां आत्मा।

प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान, नाग कूर्म, देवदत्त कृकट एवं धनंजय।

इन्द्रियों को भी प्राण कहते हैं 5 ज्ञानेन्द्रियां 5 कर्मोन्द्रियां और एक मन इस प्रकार कुल 11 रूद्र। जब ये प्राण एवं आत्मा अथवा 10 इन्द्रिया एवं मन जब शरीर से निकलते है तो सब सम्बन्धियों को रूलाते है (रूद्र का अर्थ रूलाना)

12 आदित्य-सम्वत्सर के 12 मास ही 12 आदित्य हैं। ये मास-महीने सब कुछ समेटे हुए 'आदान' करते हुए चले जा रहे है इस लिए इन्हें 12 आदित्य कहा जाता है ''सर्वमाददाना यन्ति ते यदिदँ. सर्वमाददाना यन्ति तस्मादादित्या इति।''

इस सब विश्व को साथ लेते हुए चलते हैं आगे बढ़ रहे है वे जो इस सब को साथ लेते हुए चलते है उस कारण से आदित्य कहलाते हैं।

इन्द्र कौन है ? स्तनयित्न अर्थात् मेघ ही इन्द्र है ! अशनि अर्थात् विद्युत ही स्तनयित्नु है। बिजली से मेघ वृष्टि करता है। उससे अन्नादि उत्पन्न होकर ऐश्वर्य की वृद्धि होती है। यही इन्द्र का रूप है। प्रजापति कौन है ? यज्ञ ही प्रजापति है। यज्ञ कौन-सा है ?

पशु ही यज्ञ है। जीवित जगत में पशु के जीवन से यज्ञ प्रारम्भ होता है जो सम्पूर्ण प्राणि जगत में चल रहा है। पशु से लेकर मनुष्य तक सब जगह यज्ञ ही चल रहा है सम्पूर्ण जीवन ही यज्ञमय है। यही प्रजापति का रूप है।

ये तो 33 देवता हुए परन्तु पहले जो आपने बताया था कि 6 देवता है उसका क्या अभिप्राय है। उत्तर मिला अग्नि एवं पृथ्वी वायु और अन्तरिक्ष आदित्य और द्यौ। फिर वे 3 देवता कौन से है ? याज्ञवल्कय ने कहा पृथ्वी अन्तरिक्ष और द्यौ। ये ही तीन लोक है। इन तीन लोकों में अग्नि वायु और आदित्य ये देव समा जाते है। आपने यह भी कहा था कि देवता 2 होते है वे कौन से देव हैं। उतर मिला अन्न और प्राण। अन्न प्रकृति का और प्राण जीवन का प्रतिनिधि है। अन्तत: प्रश्न किया गया कि फिर वह अध्यर्द्ध अर्थात् 1-1/2 कौन सा है। उतर दिया गया कि यह जो चल रहा है अर्थात् प्राण. ब्रह्माण्ड का वायु और पिण्ड का प्राण ही तो डेढ देव है। परन्तु प्राण तो एक ही है इसे डेढ़ कैसे कहते है। याज्ञवल्क्य ने उतर दिया कि डेढ़ तो वैसे ही कह देते है वास्तव में अध्यर्द्ध का अभिप्राय है-जिसमें सब अधि-ऋषि अर्थात् सह वृद्धि को प्राप्त हों, समृद्ध हो बढ़े फूलें। प्राण में ही ऋद्ध समृद्ध होता है फूलता फलता है। इसलिए प्राण ही अध्यर्द्ध है। अन्त में प्रश्न किया गया ''कतम एको देव:''-देव एक है, वह कौन सा है ? याज्ञवलक्य का उत्तर था कि प्राण ही तो एक देव है उसी को ब्रह्म कहते हैं उसी को ब्रह्मवेता 'त्यत' अर्थात वह वह कह कर ही उसका बोध होता है।

यही प्रश्नोपनिषद (पिछले लेख) में कहा गया था कि प्राण ही जीवन का आधार है शरीर मात्र का ही नहीं अपितु ब्रह्माण्ड का भी।

अन्त में याज्ञवल्कय से फिर प्रश्न किया गया कि क्या आप उस पुरूष को जानते हो जो सब प्राणियों का परम धाम है, जो मन को ज्योति बनाकर अग्नि के सहारे मानो पृथ्वी में आकर साक्षात ठिकाना बनाए बैठा है। याज्ञवल्कय ने सटीक उतर दिया कि वह तो शरीर पुरूष है। विश्व के विशाल शरीर वाला पुरूष। ब्रह्म तो इससे बहुत अधिक है। सिर्फ इस विश्व में ही वह समाप्त नहीं हो जाता।

अब प्रश्न उठा कि वह पुरूष स्वयं ब्रह्म देव नहीं तो फिर उसका कौन देव है। याज्ञवल्कय ने कहा उसका देव अमृत है वह अमृतरूप परमात्मा ही सब देवों का देव है। यह विश्व तो मरणधर्मा है परन्तु वह तो मरणधर्मा न होकर अमर है, अमृत है।

इसी सन्दर्भ में यह भी ज्ञातव्य है कि यास्काचार्य ने बड़े ही स्पष्ट रूप में देवता के लिए देव शब्द का निर्वचन किया है।

देव दानाद् वा दीपनाद् वा द्योतनाद् वा द्युस्थानों भवतीति वा। निरूक्त 7/15

अर्थात् देव वह है जो देता है, स्वयं प्रकाशमान है, दूसरे को प्रकाशित करता है या द्युलोकस्थ है।

इस दृष्टि से पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्र आदि देव है क्योंकि ये संसार का उपकार कर रहे हैं। इसी श्रृंखला में विद्वजन आचार्यजन, माता, पिता एवं परिवार के हितैषी सज्जन आदि सभी देवता है। ''विद्वांसों हि देवा:।'' शतपथ 3/7

वैदिक ऋषियों ने कृतज्ञता स्वरूप इनको देव अथवा देवता कहा तथा इनके अनुग्रह की कामना की। वैसे तो जैसे पहले बताया जा चुका है कि देवता तो एक ही है। ऋग्वेद का कथन है कि मूलरूप में एक ईश्वर की ही सत्ता है उसको ही विद्वानों ने अलग नाम दिए है।

एकं सदविप्रा बहुधा वदन्ति (ऋग् 1/164/46)

जहां यास्क ने देव शब्द का निर्वचन उपरोक्त रूप से दिया है वहीं यह भी कहा है कि वहीं मूलसत्ता महाशक्ति युक्त है। उसकी निमित्त शक्तियों को ही अनेक नाम दिए जाते है।

महाभाग्याद् देवताया एक एवात्मा बहुधा स्तूयते (निरूक्त 7/4)

ऋग्वेद में यह भी वर्णित है कि तीन मुख्य है। पृथ्वी पर अग्नि, अन्तरिक्ष में वायु और द्युलोक में सूर्य।

सूर्यो नो दिवस्पातु वातो अन्तरिक्षाद अग्निर्न: पार्थिवेभ्य:।। (ऋग् 10/15/1)

याज्ञवल्कय ने जिन 33 देवताओं के विषय में बताया है उन्हीं का शतपथ ब्राह्मण 11/6/3/5 और एतरेय ब्राह्मण 12/11/22 में वर्णन है। अर्थात् 8 वसु 11 रूद्र 12 आदित्य, इन्द्र, प्रजापति।

अन्तत: सारांश तो यही है कि कल्याणकारी होने के कारण अनेक देवता गिने जा सकते है, परन्तु परमात्मा तो उसी एक देव महादेव परमपिता परमेश्वर को ही कहते है। इसी तथ्य को याज्ञवल्कय की व्याख्या ऋग्वेद यजुर्वेद 32/1 आदि प्रमाणित करते है अथर्ववेद भी यही कह रहा है

न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते।

नाष्टमो न नवमो दशो नाप्युच्यते।

तमिदं निगतं सह: स एष एक एकवृदेकं एव।

इन्हीं तथ्यों के कारण महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज को दूसरे नियम में कहा ''ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप--सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करने योग्य है।''

www.thearyasamaj.org

राष्ट्र एकता के सूत्रधार

-ले० रामकुमार सोबती (प्रिंसीपल) गांधी आई हाई स्कूल बरनाला

महर्षि दयानन्द को लोगों ने विभिन्न दृष्टिकोण से देखा है। परन्तु ऋषि के सत्य को प्रगट एवं मिथ्यामत को खण्डित करने के मानव उचित कार्य से कुछ लोगों को वैमनस्य तथा विघटन वादी प्रवृति की गन्ध आती है। यह बात केवल सामान्य लोगों की ही नहीं बल्कि जिन्हें राष्ट्रपिता की उपाधि से सुभोभित राष्ट्र पिता महात्मा गांधी जैसे व्यक्ति ने भी इन्हीं काल्पनिक विचारों में आकर एक समय महर्षि तथा सत्यार्थ प्रकाश के विरूद्ध अनर्गल बाते लिखकर सर्वप्रिय होने का असफल प्रयास किया था, तो क्या वास्तव में महर्षि के विचार एवम् कार्य मानव समाज में विघटन उत्पन्न करते है ? आइये अपने विवेक से विचार कर चिन्तन करे ! महर्षि से पूर्व ईश्वर की मान्यताओं का क्षेत्र एक युद्ध का अखाड़ा बना हुआ था राम के उपासक, कृष्ण के उपासक को गाली देता था। कृष्ण के भगत् राम तथा विष्णु के भक्तों को गालियां देते थे उसी प्रकार शिव, इन्द्र ब्रह्मा, सरस्वती, के उपासकों के वर्ग बने हुए थे जो आपस में लड़ते-झगड़ते रहते थे सारा हिन्दु समाज ईश्वर के नाम पर अंसख्य गुटों में बंटकर युद्ध का अखाड़ा बना हुआ था। महर्षि दयानन्द ने उस विकट परिस्थिति में सभी को एक ईश्वर का पाठ पढ़ाया और उपरोक्त सारे नाम ईश्वर के गौण तथा मार्मिक बताते हुए सबको एक ईश्वर उपासना के सूत्र में बांधते हुए मानवसमाज को संगठित किया, सत्यार्थ प्रकाश का पहला समुल्लास ईश्वर के नाम पर झगड़ते हुए विघटित मानव समाज को संगठित करने का प्रत्यक्ष प्रमाण लिखा है। क्या इतने उपकार के बाद भी ऋषि को फूट डालने वाला कहकर इन महान् लोगों ने अपनी अज्ञानता प्रकट नहीं की ?

महर्षि दयानन्द से पहले धर्म और धर्म ग्रन्थ के नाम पर कितना अत्याचार, पाप, अन्याय और रक्त पात होता था इसका इतिहास ही साक्षी है। परन्तु ऋषि ने कहा, "कि सब सम्प्रदायीं का मूल वेद है। अत: वेद को अपना धर्म ग्रन्थ मानो क्योंकि यह सार्वभौम है। अन्य सारे ग्रन्थ किसी देश-विशेष वर्ग-विशेष, एवम् विचार-विशेष से ही बन्धे हुए है औरों का क्या कहे भारत में ही धर्म ग्रन्थों के सम्बन्ध में ना-जाने कितने वर्ग बने हुए थे, ऋषि ने प्रबल घोषणा की कि इन सभी धर्म ग्रन्थों में जितना सत्य है वह वेद से गया है अत: आगे वेद पर एक मत होकर आचरण करें ज़रा अपने विवेक से सोचे कि ग्रन्थ विशेष में विभक्त निष्ठ लोगों को एक सूत्र में पिरोने का कार्य संगठित करने का प्रशंसनीय प्रयास नहीं कहलाये क्या।

महर्षि के समय विश्व मजहबों की टुकड़ियों में बंट कर पारस्परिक जघन्य संघर्ष का घृणित क्षेत्र बना हुआ था महजब के नाम पर क्या-क्या अमानवीय कार्य किये गये है जिन्हें लिखते हुए लेखनी भी थर्राती है। ऋषि ने सबको संगठित होने का उपाय मानवीय धर्म बताया अर्थात् धर्म उत्तम आचरणों को धारण करने का नाम है ऋषि ने कहा कि वर्तमान मजहबों में जो अच्छी बाते है वह सभी मानव धर्म वेद से गई है। दूसरी बात यह है कि सभी मत मनुष्य विशेषों के आश्रय पर बने हुए है इसलिए मजहब आपस की फूट का कारण बने है। ऋषि ने कहा जो भी उत्तम आचरण करेगा वह धार्मिक और उत्तम आचरण में सभी एकमत है। भेद है तो अपनी कपोल कल्पनाओं में अत: सब मानव समाज को झगड़ों की भट्ठी में झोंकने वाले इन मजहबों के ज़ाल से उठ कर 'आत्मवत् सर्वभूतेषु, आत्मन्: प्रतिकूलानि, परेषां न समाचरेत् तथा'' धारणाद्धर्म, इत्याहु:, से यथार्थ धर्म को अपनाओं क्योंकि धर्म आपस में लड़ाता नहीं हैं। बल्कि परस्पर सौहार्द सिखाया है।

और की छोड़िए एक ही ईश्वर को मानने वाले ईश्वर के सगुण और निर्गुण, स्वरूपों, पर विभक्त होकर लड़ते थे ऋषि ने समझाया प्रत्येक वस्तु सगुण तथा निर्गुण होती है। जो गुण वस्तु में हो वो उनके कारण तो सगुण और जो न हो उनके कारण निर्गुण होती है यह नियम सभी जगह लागू होता है अत: ईश्वर सगुण भी है निर्गुण भी है। इस कारण एक ही ईश्वर के भक्तों तुम्हें एक ईश्वर के नाम पर काल्पनिक मिथ्या बातें बना कर लड़ना-झगड़ना नहीं चाहिए। मानव को संगठित करने का कितना सुन्दर उपाय बताया है।

इसके अतिरिक्त लोग कहते थे कि दर्शनकारों में परस्पर मत भेद है, इस विचार का प्रभाव आर्यों में फूट को बढ़ाने में सहायक होता था स्वामी जी ने कहा कि दर्शनकारों में कोई मतभेद नहीं था सृष्टि के छ: अवयवों की एक-एक दर्शनकार एक-एक की व्याख्या करता है वेद एवम् वैदिक मान्यताओं पर किसी का भी मतभेद नहीं ऋषि ने इसी विचार के माध्यम से आर्यों को संगठित करने का प्रयास किया।

ऋषि दयानन्द के समय जात-पात, के द्वारा तो फूट पिशाचनी आर्यों को निगले ही जा रही थी दयानन्द ने उसका विरोध कर गुण, कर्म, एवम् स्वभाव आधार पर ऊँच-नीच का निर्णय दिया जिसके मानव समाज को संगठित होने में अत्यधिक सहायता मिली उस समय प्रांतवाद, भाषावाद, तो सीमा पार करने को हो रहा था। ऋषि ने इनकी सीमाये तोड़ कर स्वयं उत्तर भारत में प्रचार किया और अपना साहित्य आर्य भाषा में लिखकर सारे राष्ट्र को संगठन के सूत्र में पिरोने का महत्वपूर्ण कार्य किया। फूट के प्रतीक छुआ-छूत ने जो विनाश किये वह शताब्दियों तक मिटने असंभव है इसी पिशाचनी ने देश के टुकड़े करा दिये और आज भी टुकड़े होने के आसार हो रहे है काश ! हम ऋषि के बताए उपायो को अपना पाते तो आज देश का नक्शा और ही कुछ होता इस प्रकार ऋषि के लगभग प्रत्येक कार्य से देश के संगठन को बल ही मिला परन्तु आज के ड़रपोक एवम् सर्वप्रियता वादी लोग ऋषि पर विघटनवाद का आक्षेप लगाते है। क्योंकि ऋषि ने सत्य कह दिया है यह उनका दोष समझ लीजिए आज तो जो हलवा एवं् गोबर को एक जैसा बताते है वह ठीक है परन्तु यदि बुद्धि से काम लेकर दोनों में भेद बताये तो फूट डालने वाला और सम्प्रदायिक कहलाने लगता है ऋषि दयानन्द के साथ भी यही सब कुछ हो रहा है यदि ऋषि चोर को चोर और शाह को शाह न कहकर दोनों को समान कह देते तो इन लोगों की दृष्टि में ठीक था। अत: ऋषि दयानन्द सत्य के आधार पर ही एकता स्थापित करना चाहते थे जो सर्वथा उचित था आर्यों अपने कार्य मानव समाज को एकता के सूत्र में पिरोने वाले आचार्य ऋषि दयानन्द के शिष्य होकर क्यों अनेकता, विघटन एवम् कलह के शिकार बन रहे हो सोचो तुम अपने आचार्य के आदेशों से कितनी दूर जा रहे हो क्या ऋषि का ज्वलन्त जीवन तुम्हें कुछ सिखायेगा नहीं ? लौटो, सम्भलों, और होश में आओ तथा ऋषि के सच्चे शिष्य होने के गौरव एवम् अधिकार को प्राप्त करके अपने सच्चे आर्यत्व का प्रमाण दो !! कृण्वन्तो विश्वं आर्यम्।

उत्सवीय सूचना

आपको यह जानकर अति हर्ष होगा कि आप सभी महानुभावों के स्नेह, सौहार्द, सद्भावना से संचालित गुरुकुल हरिपुर, जुनानी का सप्तम चतुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं वार्षिक महोत्सव **दिनांक 28,29,30 जनवरी -2017 शुक्र, शनि, रविवार** को देश के लब्धप्रतिष्ठित विद्वानों, साधु-सन्तों, सद्गृहस्थियों एवं श्रद्धालु आर्यजनों की पावन उपस्थिति में सम्पन्न होने जा रहा है। इन तिथियों में आप अन्यत्र कहीं कार्यक्रम न बनाकर सपरिवार गुरुकुल तीर्थ, साधु-सन्त दर्शन, आत्मनिर्माण तथा समाज सेवा में अहर्निश समर्पित गुरुकुल, ऋषिकुल, आचार्यकुल के आदरणीय आचार्यों तथा ब्रह्मचारियों का दर्शन कर पुण्य लाभ प्राप्त करें।

www.thearyasamaj.org

शोक समाचार

आर्य समाज फतेहगढ़ चूड़ियां के प्रधान श्री नरेन्द्र कुन्द्रा जी का निधन 18-9-2016 को हो गया। श्री कुन्द्रा जी पिछले कई दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे। उनकी आत्मिक शान्ति के लिए अन्तिम शोक सभा का आयोजन किया गया। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्रदान करे तथा अपने चरणों में स्थान दे। परिवार को इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। हम सभी उस दिवंगत आत्मा के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

सतीश कुमार सच्चर मन्त्री आर्य समाज

104 वर्षीय माता सुशीला आर्या जी नहीं रही

आर्य समाज नवांशहर की प्रबन्ध समिति की सदस्या श्रीमती सुशीला आर्या धर्मपत्नी स्व. कैप्टन पुरुषोत्तम देव आर्य की 104 वर्ष की आयु में मृत्यु हो गई। माता सुशीला आर्या जी ने 6 बार सत्यार्थ प्रकाश और वेद पढ़े। आर्य मर्यादा साप्ताहिक के वे आजीवन सदस्य थी। श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल जी ने माता सुशीला आर्या जी को अपनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि माता जी एक विदुषी महिला थी। 100 वर्ष की आयु पूर्ण होने पर उन्होंने हवन यज्ञ करवाया और स्वयं भजन भी गाया था। इनके पैतृक भी आर्य समाजी थे और ससुराल वाले भी आर्य समाजी थे। श्री सुरेश शास्त्री जी ने पूर्ण वैदिक रीति से इनका अन्त्येष्टि संस्कार और अन्तिम शोक दिवस सम्पन्न कराया।

मन्त्री आर्य समाज नवांशहर

श्रीमती इन्दु गौतम जी नहीं रहीं

आर्य समाज नवांशहर की कर्मठ कार्यकर्ता, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की पूर्व अन्तरंग सदस्या श्रीमती इन्दुमति गौतम धर्मपत्नी स्व. प्रिं. इन्द्रदेव गौतम का देहान्त दिनांक 27 सितम्बर 2016 को दिल्ली में देहान्त हो गया। उनका अन्तिम संस्कार वैदिक रीति से किया गया। उनकी आत्मिक शान्ति के लिए अन्तिम शोक सभा का आयोजन 7 अक्तूबर को दिल्ली में किया गया। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्रदान करे तथा अपने चरणों में स्थान दे।

मन्त्री आर्य समाज नवांशहर

शोक प्रस्ताव

यह दुःखद समाचार जानकर गहरा आघात लगा कि परोपकारिणी सभा अजमेर के प्रधान डा. धर्मवीर जी का पिछले दिनों अचानक निधन हो गया है। उनके निधन से आर्य जगत को अपूर्णीय क्षति हुई है। डा. धर्मवीर जी ने अपने जीवन में सदैव महर्षि दयानन्द सरस्वती जी एवं आर्य समाज के सिद्धान्त को आगे बढ़ने तथा संगठन को सुदृढ़ बनाने का कार्य किया। डा० धर्मवीर जी वेदों के मूर्धन्य विद्वान, प्रकान्ड पंडित, विनम्रता के धनी, यज्ञ के उपासक थे, उनका स्वभाव बड़ा सरल था। उनका सम्पूर्ण जीवन मानवता के लिए सदैव मार्ग दर्शन के रूप में रहेगा।

केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर एवं अमृतसर की समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारी तथा कार्यकर्ता डा० धर्मवीर जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा के लिए शान्ति, सद्गति तथा समस्त परिवार तथा सगे सम्बन्धियों को इस दुःख को सहन करने का बल की प्रार्थना करते हैं।

पृष्ठ 2 का शेष-''महर्षि का वेद-भाष्य....

हो गये। महर्षि दयानन्द ने वेदों की रक्षा करने का उपदेश दिया। गौ को ''अघ्न्या' अर्थात् हिंसा को अयोग्य बताया और गो मेध का अर्थ गाय की हिंसा नहीं अपितु इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना है। अश्वमेध का अर्थ घोड़े को मारना नहीं अपितु प्रजा का पालन करना है। मृतक शरीर अर्थात् शव का अन्त्येष्टि संस्कार को नरमेध बताया। साथ ही यह भी बताया कि इनकी हिंसा करने वाले को सीसे की गोली से मार देना चाहिए। वेदों के नाम पर पशु हिंसा के कलंक को समाप्त करने का अद्भुत कार्य महर्षि ने अपने वेद भाष्य के द्वारा किया। साथ ही वेदों को ईश्वरीय ज्ञान तथा सब सत्य विद्याओं की पुस्तक बतलाकर वेदों के महत्व को बढ़ाया और वेदों को केवल कर्मकाण्ड तक ही सीमित नहीं रखा।

इस लेख को पढ़कर सुधि पाठकगण यह समझ गए होंगे कि मध्यकालीन वेद भाष्य कक्षाओं ने वेदों के अर्थ का अनर्थ करके वेदों में हिंसा तथा अनर्गल बातें बताकर वेदों को कितना बदनाम किया है, जिससे आम व्यक्ति वेदों में विश्वास व श्रद्धा न रख करके मानव मात्र का बड़ा हित व कल्याण किया है। ऐसे देव दयानन्द को ''खुशहाल'' नमन होकर श्रद्धा-सुमन अर्पित करता है।

संस्कारक श्रीवत्स जयन्ती समारोह सम्पन्न

ओड़िशा प्रदेश के सर्वप्रथम आर्यसमाजी, सत्यार्थ प्रकाश, संस्कारविधि आदि ऋषिकृत ग्रन्थों के सर्वप्रथम ओड़िया अनुवादक, ओड़िशा के सर्वप्रथम ग़ोशाला के संस्थापक स्व. श्रीवत्स पण्डा जी का 147 वां जन्म जयन्ती समारोह जगन्नियन्ता प्रभु की दया से 02.10.2016 को तनरडा गोरक्षा आश्रम के मन्त्री, आर्यजगत् के युवा वैदिक विद्वान डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य जी के कुशल संयोजकत्व में तथा आश्रम के समस्त पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के पुरूषार्थ से निर्विध्न सम्पन्न हुआ। जन्म जयन्ती कार्यक्रम में पूज्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती संस्थापक-गुरुकुल आमसेना, इं. प्रियव्रत दास, माता शन्नोदेवी भुवनेश्वर, गुरुकुल वेदव्यास के अधिष्ठाता आचार्य डॉ. देवव्रत जी तथा ओड़िशा के विभिन्न आर्यसमाजों से सैकड़ों श्रद्धालु आर्यसज्जन उपस्थित थे। इस अवसर पर श्री जितेन्द्र मोहन मेहता जी नई दिल्ली के आर्थिक सहयोग से गुरुकुल हरिपुर के तत्वावधान में स्थानीय पचास दिव्यांग परिवारों को कम्बल एवं साड़ी वितरण किया गया।

वेद सप्ताह मनाया गया

आर्य समाज जालन्धर छावनी में वेद प्रचार सप्ताह दिनांक 19-9-2016 से 25-9-2016 तक बड़े हर्ष उत्साह से मनाया गया। इसमें सप्ताह भर श्रीमति निर्मला वसु (पानीपत वालों) द्वारा बहुत ही मधुर भजन प्रस्तुत किए गए एवं वेदोपदेशक श्री जगदीश वसु द्वारा वेदों पर आधारित प्रवचन बड़े सरल भाषा में दिया जिसकी सभी ने बहुत प्रशंसा की। प्रातः हवन, भजन एवं प्रवचन तथा सायं को भजनों तथा प्रवचन का कार्यक्रम चला।

इसमें आर्य समाज के सदस्यों के अतिरिक्त छावनी निवासियों, स्त्री आर्य समाज, आर्य स्कूल की अध्यापिकाओं और बच्चों ने बड़े उत्साह से कार्य सम्पन्न करवाएं। सैकड़ों आर्य बन्धुओं ने यजमान बनाकर आहुतियाँ दी एवं कार्यक्रम को सुशोभित किया। मंच संचालन का कार्य स्वयं मंत्री श्री जवाहर लाल जी ने बड़ी अच्छी तरह निभाया।

समापन पर ऋषिलंगर का आयोजन किया गया। आर्य समाज के प्रधान श्री चन्द्र गुप्ता जी द्वारा सभी के सहयोग के लिए आभार प्रकट किया।

जवाहर लाल महाजन

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज तलवाड़ा टाऊनशिप का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्य समाज मन्दिर तलवाड़ा टाऊनशिप का वार्षिक उत्सव दिनांक 21, 22, 23 अक्तूबर 2016 को बड़े धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत् के उच्चकोटि के विद्वान् आचार्य रामानन्द जी शिमला, महोपदेशक पं. विजय कुमार शास्त्री तथा भजनोपदेशक श्री अरूण विद्यालंकार जी विशेष रूप से आमन्त्रित थे। कार्यक्रम प्रात: हवन यज्ञ एवं प्रवचन 8:00 से 10:00 तक तथा रात्रि वेद कथा एवं भजन 8:00 से 10:00 बजे तक होता रहा।

आर्य समाज तलवाडाटाऊनशिप के वार्षिक उत्सव पर आर्य समाज के पुरोहित श्री परमानन्द जी को सम्मानित करते हुये समारोह के मुख्य अतिथि एवं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के साहित्य विभाग के अधिष्ठाता श्री विनोद भारद्वाज। उनके साथ खड़े हैं लुधियाना से पधारे श्री मनोहर लाल आर्य, आर्य समाज तलवाडा के पदाधिकारी एवं सदस्य, सभा के महोपदेशक श्री विजय शास्त्री, श्री विनोद भारद्वाज, आचार्य रामानंद जी, सभा के भजनोपदेशक श्री अरुण जी वेदालंकार, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल एवं कार्यलाध्यक्ष श्री जोगिन्द्र सिंह जी।

23 अक्तूबर रविवार को प्रात: 9:00 बजे यज्ञ आरम्भ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य रामानन्द जी थे। उनके साथ श्री विजय कुमार शास्त्री एवं श्री अरूण विद्यालंकार ने भी मन्त्रोच्चारण किया। सभी उपस्थित श्रद्धालुओं ने यज्ञ में आहुतियां डालकर पुण्य लाभ प्राप्त किया और विद्वानों का आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर मुख्यातिथि के तौर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से माननीय श्री विनोद भारद्वाज उपस्थित हुए। उनके साथ वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल जी एवं कार्यालयाध्यक्ष श्री जोगिन्द्र सिंह जी भी विशेष रूप से उपस्थित हुए। इस अवसर पर आर्य सम्मेलन श्री विनोद भारद्वाज जी की अध्यक्षता में शुरू हुआ। सम्मेलन का शुभारम्भ भजनों के द्वारा किया गया। श्री अरूण विद्यालंकार जी ने अपने मधुर भजनों के माध्यम से आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द का गुणगान किया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक पं. विजय कुमार शास्त्री जी ने नैतिक शिक्षा के ऊपर बल देते हुए कहा कि हमें अपनी सन्तान का निर्माण करना चाहिए। सन्तान को उच्च संस्कार देते हुए उनके जीवन का सर्वांगीण विकास करना चाहिए क्योंकि इन्हीं के उज्जवल भविष्य से राष्ट्र का निर्माण होता है। हमें अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करना चाहिए, उनकी सेवा करनी चाहिए। जिस प्रकार मर्यादापुरूषोत्तम श्रीराम अपने पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए चौदह वर्ष का वनवास काटने के लिए जंगल में गए थे, उसी प्रकार हमें कभी भी माता-पिता और गुरू की अवहेलना नहीं करनी चाहिए। आर्य जगत् के उच्चकोटि के विद्वान् आचार्य रामानन्द जी ने अध्यात्म के ऊपर चर्चा करते हुए सोमरस का वर्णन किया। उन्होंने अपनी चर्चा में ईश्वर भक्ति, उपासना आदि विषयों पर बल दिया। वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल जी ने भी इस अवसर पर अपने विचार रखें। अपना अध्यक्षीय भाषण देते हुए श्री विनोद भारद्वाज जी ने आर्य समाज के सिद्धान्तों पर चलने का सन्देश दिया। उन्होंने कहा कि हम सभी संगच्छध्वं, संवदध्वं की भावना को धारण करते हुए आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य करें।

आर्य समाज के अधिकारियों द्वारा सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत और सम्मान किया गया तथा विशेष रूप से धन्यवाद किया गया। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। तत्पश्चात ऋषि लंगर का आयोजन किया गया, जिसमें भारी संख्या में लोगों ने ऋषि लंगर का प्रसाद ग्रहण किया। इस अवसर पर समाज के सभी अधिकारी वर्ग पं. परमानन्द जी, माता कृष्णा देवी जी, रजनी कान्त, सतपाल रल्हण, रोहित अवस्थी, प्रभु सिंह, मनीष कश्यप, संजीव, रविन्दर, कर्ण आदि ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। भूतपूर्व अधिकारियों में लुधियाना से श्री मनोहर लाल जी, करनाल से श्री रमेश भाटिया जी, नंगल से आसकरण सरदाना जी साथियों सहित पहुँचे।

ऋषि निर्वाण दिवस एवं दीपावली पर्व मनाया गया

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में ऋषि निर्वाण दिवस एवं दीपावली पर्व पर विशेष हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य यजमान श्री धर्मवीर भनोट व श्रीमती रजनी भनोट एवं श्री नवीन चावला, अदिति चावला ने पवित्र वेदमन्त्रों से आहुतियां डाली। इसके बाद आर्य समाज की सुप्रसिद्ध भजन गायिका सोनू भारती ने ऋषि दयानन्द व मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी के भजन सुनाकर सबको मन्त्रमुग्ध कर दिया। इसके बाद श्री रविन्द्र आर्य जी ने एक भजन सुनाया– बीहड़ वन में विचर रहा था सच्चे शिव का मतवाला..... आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री नारायण सिंह जी ने अपने उपदेश में कहा कि महर्षि स्वामी दयानन्द के उपकार नारी शक्ति पर बहुत हैं। स्वामी जी के कारण ही आज महिलाएं हवन यज्ञ कर रही हैं या वेदपाठ कर रही हैं या उच्च पदों पर प्रतिष्ठित हैं। स्वामी दयानन्द ने अपने परिवार को छोड़ कर संसार के कल्याण का मार्ग अपनाया। आज हमें गर्व है कि हम महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों पर चल रहे हैं। इसके बाद आर्य समाज के प्रधान श्री रणजीत आर्य ने कहा कि जहां आज हमें दीपावली के पर्व की अत्यन्त प्रसन्नता है वहीं पर निराले स्वामी देव दयानन्द जी समस्त जनमानस को वेद रूपी अमृत का प्याला पिलाया और वेदों के उद्धार के लिए सब कुछ न्यौछावर कर दिया था। ऐसे अद्भुत महर्षि दयानन्द ने दीपावली के दिन 1883 में अपने नश्वर शरीर को त्याग कर परम मोक्ष को धारण किया था। इस दौरान उपस्थित ईश्वरचन्द्र रामपाल, हर्ष लखनपाल, चौधरी हरिचन्द, रमेश मुटरेजा, विजय चावला, सुरेन्द्र कुमार अरोड़ा, सतमापल मल्होत्रा, रजनीश सचदेव, कुबेर शर्मा, नन्दिनी शर्मा, सुदर्शन आर्य, संगीता तिवारी, धर्मवीर आर्य, निर्मला आर्य, रनी अरोड़ा, संदीप अरोड़ा, गितिका अरोड़ा, सुभाष मैहता, राजीव शर्मा, सुभाष आर्य, इन्दु आर्य, दिव्या आर्य, सृश्टि आर्य, वंश आर्य, अश्विनी डोगरा, सोमाश अरोड़ा, पवन शुक्ला, शादी लाल, तिलकराज, अर्चना मिश्रा, कमलेश कुमार, तान्या आर्य, उर्मिला भगत, स्वर्ण शर्मा एवं समस्त भगत सिंह कालोनी निवासियों ने भाग लिया।

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में भजन गाती हुई प्रसिद्ध भजन गायिका सोनू भारती एवं मंच पर बैठे हुये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री नारायण सिंह जी जबकि उपस्थित आर्य जन।

हर्ष लखनपाल मन्त्री
आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com